29 दिसम्बर 2013 रविवार को श्रीरामशरणम् दिल्ली में श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा आयोजित मीटिंग

सभी स्थानों के श्रीरामशरणम् केन्द्रों से पधारे प्रचारकों, संचालकों, व्यवस्थापकों, सोसायटी के सदस्यों, वरिष्ठ साधकों, कार्यकर्ताओं व ट्रस्टीगण का इस मीटिंग में हार्दिक स्वागत है। कड़ाके की सर्दी के इस विपरीत मौसम में यात्रा के कष्ट उठाकर आप सभी यहाँ पधारे हैं इसके लिए सभी का हृदय से धन्यवाद। हम सभी परमपूज्य तीनों गुरूजनों के पावन श्री चरणों में बारम्बार प्रणाम, नमस्कार व वन्दना करते हैं। उनकी सूक्ष्म उपस्थिति में इस मीटिंग में सभी का स्वागत करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है।

पिछले वर्ष 16 जुलाई एवं 22 दिसम्बर, 2012 को श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली द्वारा इसी प्रकार की मीटिंग आयोजित की गई थी। ट्रस्ट के तत्कालीन चैयरमैन परम आदरणीय स्वर्गीय श्री सतपाल विरमानी जी के मार्गदर्शन में इन बातों पर विचार–विमर्श हुआ कि श्रीरामशरणम् में सत्संग, साधना व सेवा के, नाम दीक्षा व राम–नाम के प्रचार के सभी कार्य, पूज्य गुरूजनों के निर्देशों, नियमों व अनुशासन के अन्तर्गत, सुचारू रूप से यथावत होते रहें, उनमें किसी भी प्रकार का विचलन, विकार या कमी नहीं आए। यह संतोष व हर्ष की बात है कि परमपूज्य गुरूजन अपनी सूक्ष्म उपस्थिति में अपने आत्मबल के साथ भली–भांति इसे निभा रहे हैं, करवा रहे हैं। परमपूज्य श्री स्वामीजी महाराज के कुल में हर जगह से नये सदस्य भी नाम दीक्षा के माध्यम से जुड़ रहे हैं।

हम सभी जानते हैं कि ट्रस्ट द्वारा 16 जुलाई की मीटिंग के पहले प्रमुख स्थानों के वरिष्ठ साधकों से विचार–विमर्श करके उनकी राय ली गई, जिसमें यह बात सामने आई कि परमपूज्य श्री विश्वामित्र जी महाराज ने महानिर्वाण के पश्चात् उनके स्थान पर, उनकी भांति, रामकाज का नेतृत्व करने के लिए

किसी को अधिकृत नहीं किया, न ही कभी किसी के लिये संकेत किया और न ही उनके जैसे ओज व तेज के साथ परमपूज्य श्री स्वामीजी महाराज के रामकाज को आगे ले जाने वाला ऐसा कोई व्यक्ति प्रत्यक्ष दिखाई दिया है जो श्री स्वामीजी महाराज द्वारा श्री भक्ति प्रकाश में "गुरू महिमा" में वर्णित कसौटियों पर खरा उतरता हो। तब गुरूजनों की प्रेरणा से नियमित सत्संग, विशेष सत्संग, खुले व साधना सत्संग शिविरों एवं नाम दीक्षा हेतु, (ट्रस्ट को ट्रस्ट डीड में श्री स्वामीजी महाराज द्वारा दिये गये निर्देश रूपी अधिकारिता के अन्तर्गत), सबकी सहमति से रामकाज का वर्तमान स्वरूप तय हुआ। और परमात्मा श्रीराम एवं हमारे प्यारे गुरूजनों की अपार कृपा, बल व सामर्थ्य से उसी के अनुरूप विशुद्ध सत्संग व अन्य आध्यात्मिक कार्य पूरे भावचाव, श्रद्धा, भक्ति व अनुशासन के साथ, सभी के सहयोग से, सभी श्रीरामशरणम् केन्द्रों में सम्पन्न हो रहे हैं। खुले व साधना सत्संग शिविर एवं नाम दीक्षा भी हो रही है।

यहाँ यह उल्लेख किया जाना उचित प्रतीत होता है कि यदि कभी भविष्य में कोई सुपात्र, आध्यात्मिक व्यक्तित्व उपलब्ध होगा तब उसके संबंध में भी ट्रस्ट द्वारा पूर्व की भांति वरिष्ठजनों की राय व सहमति से, परमपूज्य गुरूजनों की अपार आध्यात्मिक शक्तियों से बल व प्रेरणा की प्रार्थना के साथ उचित निर्णय लेने की प्रक्रिया अपनाई जाएगी।

वर्तमान में श्रीरामशरणम् के सभी आध्यात्मिक कार्य परमपूज्य गुरूजनों की सूक्ष्म उपस्थिति में, सुचारू रूप से सम्पन्न हो रहे हैं। वे स्वयं भौतिक शरीर में नहीं हैं किन्तु आप सभी को यंत्र व निमित्त बनाकर "**अपना काम**" सफलतापूर्वक पूर्ण करवा रहे हैं। इस निस्वार्थ गुरूमुखी सेवाकार्य के लिये आप सभी धन्यवाद एवं प्रशंसा के पात्र हैं।

जम्मू, राजस्थान व झाबुआ में जो विलक्षण सेवा कार्य स्थानीय साधकों ने किया है, उसके लिये उन्हें बहुत–बहुत बधाई। उनकी लगन, श्रद्धा, भक्ति,

तत्परता, आपसी प्रेम, अनुशासन प्रियता व भावचाव हम सभी के लिये प्रेरणादायक है।

यह अनुरोध है कि भविष्य में भी हम सभी और अधिक समर्पण, तत्परता, दृढ़ता व सेवा भाव के साथ, परमपूज्य गुरूजनों को अपने अंग–संग मानते हुए, उनके द्वारा स्थापित उच्च आदर्शों, कड़े अनुशासन व चारित्रिक पवित्रता को बनाये रखकर, सभी के प्रति समानता का भाव रखते हुए उन्हें श्रीरामशरणम् से जोड़े रखने की भावना के साथ, मान–बढ़ाई, कर्त्तापन के भाव, अहंकार, यश की इच्छा आदि विकारों से सदैव स्वयं को अलग रखें। रामकाज व सेवा, साधना, सिमरन आदि की हमारी आध्यात्मिक उपलब्धियों में निरन्तर वृद्धि हो, इसके लिये गुरूजनों से बल व शक्ति मांगते हुए संकल्प लें व समय–समय पर अपनी कार्यशैली की समीक्षा भी करते रहें। मौन भाव से कार्य करने की आदत बनायें। अनुशासन एवं पिछले साल 22 दिसम्बर को ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित निर्देश व नियमों का कड़ाई से पालन हो। किसी को भी किसी प्रकार की छूट नहीं मिले, ढिलाई या शिथिलता नहीं आये, किसी भी रूप में हम मनमुखी होकर अपनी मनमानी नहीं करने लग जायें, श्रीरामशरणम् में; पैर छूने–छुलाने की कुप्रथा के हम अंग नहीं बन जायें; इसके लिये हम सतत् रूप से सजग बने रहें। परमात्मा एवं उदार गुरूजनों से बल व शक्ति के लिये प्रार्थना करते रहें।

यह भी अनुरोध है कि हमारे पूज्य गुरुजनों ने प्रार्थना के लिए नाम जाप पर विशेष बल दिया है। परम पूज्य श्री महाराज जी ने कई स्थानों पर प्रार्थना हेतु प्रार्थना कोष स्थापित किए हैं, इसके लिए हरेक सैंटर पर प्रार्थना के पत्र डालने के लिए बॉक्स लगाएं और उसके बारे में सभी को सूचित करें, ताकि अधिक से अधिक साधक इसका लाभ ले सकें। बॉक्स में प्राप्त पत्रों को, गोपनीयता बरतते हुए, डाक द्वारा श्री रामशरणम् दिल्ली के पते पर भेजा जा सकता है।

प्रार्थना कोष की स्थापना हेतु यदि सभी नियमों का तत्परतापूर्वक पालन करने वाले, एक निष्ठ, आदर्श साधक आपकी नज़र में हों तो उन्हें प्रोत्साहित करते हुए, उनके बारे में पूर्ण जानकारी सहित पूरी गोपनीयता रख कर, ट्रस्ट से सम्पर्क किया जा सकता है।

इस बात का भी हम सबको ध्यान रखना है कि श्री रामशरणम् विशुद्ध आध्यात्मिक संस्था है। यहां अन्य गतिविधियों को कोई स्थान नहीं है, अतः प्रत्येक सैंटर में परम पूजनीय गुरुजनों के एकमात्र लक्ष्य, मानव मात्र की राम नाम के द्वारा आध्यात्मिक उन्नति के अलावा, अन्य किसी कार्य पर ध्यान केन्द्रित न करें (भले ही स्थानीय समिति के नियमों या ट्रस्ट डीड में शासकीय औपचारिकताओं की पूर्ति हेतू, अन्य सेवा कार्यों का उल्लेख हो)।

अंत में सभी से विनम्र अनुरोध है कि नियमित व विशेष सत्संगों एवं आपके यहॉ आयोजित हुए खुले व साधना सत्संग शिविरों के संबंध में फीडबैक देना चाहें तो ट्रस्ट के माननीय चैयरमैन साहब की अनुमति से संक्षेप में सभी के लाभार्थ प्रस्तुत करें। यदि किसी भी स्थान पर कोई कठिनाई आ रही हो तो उसके बारे में भी संक्षेप में बतायें। कृपया व्यक्तिगत समस्या या अन्य किसी बिन्दु को यहॉ न उठायें। उन पर अलग से चर्चा हो सकती है।

हम सभी, श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट के सम्मानीय ट्रस्टीगण के हृदय से आभारी हैं, जो इस चुनौतीपूर्ण समय में, मौन भाव से, स्वयं को पीछे रखकर, अतिशय विनम्रता के साथ श्रीरामशरणम् के सभी आध्यात्मिक कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं। परमात्मा उन्हें इसी प्रकार बल व शक्ति प्रदान करते रहें।

धन्यवाद।